म्यूचुअल फंड

ये जमा पूंजी कितनी सही?

इस समय अगर आपने अधिकांश निवेश बचत खाते या सावधि जमा में कर रखा है और आपके पास परिसंपत्ति के रूप में खुद का एक घर है, तो आप फायदे में कहे जाएंगे। आपकी तरह अधिकतर छोटे एवं मध्यम आय के निवेशक, खासकर मासिक वेतन पर आश्रित रहने वाले लोग बमुश्किल ही स्टॉक्स या म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। इसका पहला कारण जानकारी में कमी और पूर्वाग्रह से ग्रसित विचार हैं, जहां रकम डूब जाने का खतरा माना जाता है। यह आलेख वैकल्पिक एवं आकस्मिक निवेश के विकल्पों के बारे में तथ्यात्मक जानकारी देने का प्रयास है, जिनकी ओर आम निवेशक भी देख सकते हैं। इसके अंतर्गत म्यूचुअल फंड के महत्व और सहकारी मॉडल के साथ-साथ औसत उपभोक्ताओं को निवेश के बेहतर निर्णय लेने में मदद करने वाले विकल्पों और भ्रांतियों की जानकारी देना ही कंस्यूमर वॉयस का उद्देश्य है।

सरलता से निवेश करने लिए म्यूचुअल फंड की अवधारणा इस विकल्प के साथ हुई कि छोटे अकाउंट जब चाहें स्टॉक खरीद व बेच सकते हैं। मूल रूप से म्यूचुअल फंड में आपके छोटे से निवेश को विभिन्न प्रतिभूतियों में दूसरे छोटे निवेशों के साथ मिलाकर एक बड़े निवेश के पुल में परिवर्तित किया जाता है। इस तरह के फंड को म्यूचुअल फंड कहा जाता है, जिसमें सभी निवेशकों को खुद के द्वारा किए गए निवेश की तुलना में फंड से फायदा एवं साथ ही साथ एक समान स्तर पर नुकसान भी होता है। आश्चर्यजनक रूप से आप अपने ढेर सारे निवेश के माध्यम से पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते है, जिससे एक बड़ी हानि को कम किया जा सके। फंड के पोर्टफोलियो में होने वाले उतार-चढ़ाव को लेकर आपको विशेष चिंता करने की आवश्यकता नहीं होती है।

पोर्टफोलियो रखने के लिए म्यूचुअल फंड में कई विकल्प मौजूद होते हैं

सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान (एसटीपी)

एसटीपी में आप एक खास म्यूचुअल फंड में कुछ रकम रख सकते हैं और उसके बाद निश्चित रकम को दूसरे म्युचुअल फंड में ट्रांसफर भी कर सकते है।

सिस्टेमैटिक विदड्रॉअल प्लान (एसडब्ल्यूपी)

अगर म्यूचुअल फंड निवेशक हर महीने अपनी निवेश की राशि को निकालता है और वही रकम अपने बैंक अकाउंट में डालता है, तो इसे एसडब्ल्यूपी कहा जाता है। अगर बाजार में वृद्धि दिखाई देती है, तो इसे देखने के बाद निवेशक इस योजना को म्यूचुअल फंड कॉर्पस में लिक्विडेट के लिए आगे बढ़ा देता है।

सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी)

म्यूचुअल फंड में मासिक रकम निवेश करने का बेहतर जरिया है सिप, जिसमें एक निश्चित रकम आपके बैंक अकाउंट से म्यूचुअल फंड में जाती है।

फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान (एफएमपी)

बैंक में सावधि जमा की तरह फिक्स्ड मैच्यूरिटी प्लान होता है, जिसमें कुछ शर्तें भी होती हैं। बैंक में फिक्स्ड रकम की परिपक्वता राशि पर किसी तरह की गारंटी नहीं होती है, लेकिन एफएमपी में इस तरह का संकेत दिया जाता है। विनियामक फंड कंपनियों को रिटर्न की गारंटी नहीं देते हैं, लेकिन एफएमपी में कुछ रिटर्न मिलता हैं। एफएमपी दरअसल ऋण योजनाएं होती हैं और ये कम से कम 5000 रूपए के निवेश के साथ दो से तीन दिनों में खुल जाती हैं। एफएमपी से जिस सांकतिक रिटर्न की अपेक्षा, चालू लाभ से खर्च अनुपात (यह 0.25 से 1 फीसदी तक बदलता है) को घटाकर, निवेश कर सकते हैं।

निवेश के मॉडल और प्रकार

आमतौर पर कंपनी द्वारा निर्धारित लक्ष्य और म्यूचुअल फंड की योजना की शर्तों के आधार पर उपभोक्ता के धन का विभिन्न प्रकार की इक्विटीज, बांड और ऋणपत्र में निवेश किया जाता है। कुछ फंड सोना या दूसरी परिसंपत्ति में निवेश करते हैं।

कई प्रकार के म्यूचुअल फंड को लेकर एक औसत या नौसिखए निवेशक असमंजस की स्थिति में रहते हैं और साधारणतया उन्हें नहीं पता होता है कि कहां निवेश करें। हालांकि अगर कोई व्यक्ति ध्यान से पढ़ना चाहे और कुछ सलाहकारों से बात करे, तो वे विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंडों में अंतर कर सकते हैं। बाजार के आंतरिक विशेषज्ञ के बताए रास्ते पर चलते हुए, म्यूचुअल फंड निवेशक के लिए अवकाश प्राप्ति बचत को पूरक करने का बेहतर रास्ता होता है, खासकर अगर आपकी उम्र 30 वर्ष के आसपास है। आइए बाजार में चल रहे विभिन्न प्रकार के फंडों के बारे में जानकारी प्राप्त करें :

आक्रामक वृद्धि (संचयी रिटर्न)

आपके निवेश पर आक्रामक वृद्धि तब लागू होती है, जब आप स्टॉक्स की खरीददारी करते हैं, जिसमें नाटकीय

वृद्धि होने के आसार रहते हैं और रिटर्न मिल सकता है। जो निवेशक लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए यह अच्छा विकल्प है। यह सलाह दी जाती है कि अगर आप मूल बचाना चाहते हैं, तो इस विकल्प का चुनाव न करें; आप आगे बढ़ सकते हैं यदि आप अपने मूल के नुकसान को बर्दाश्त करने की क्षमता रखते हैं।

आमतौर पर आक्रामक वृद्धि उच्च दर पर रिटर्न देती है। फंड पोर्टफोलियो बड़ी, मध्यम और छोटी कंपनियों का मिश्रण होता है। इस फंड का चुनाव स्थिर, अच्छी तरह स्थापित, ब्लू–चिप कंपनियों सहित छोटे एवं नए व्यवसायों में निवेश के लिए किया जाता है। फंड मैनेजर उन कंपनियों के स्टॉक्स का चुनाव करता है, जिसमें लाभांश की देने के बजाय लाभ का उपयोग वृद्धि के लिए किया जाता है। यह मध्यम से लंबी अवधि के निवेश के लिए हैं।

फंड के प्रदर्शन के दृष्टिकोण से लंबी अवधि के वृद्धि फंड में निवेश फायदेमंद होता है। ऐसे फंड कई वर्षों तक परिवर्तनशील दिखाई देते हैं, इसलिए आपको धैर्य के साथ कुछ जोखिम के लिए तैयार रहना चाहिए।

वृद्धि एवं आय फंड (संतुलित फंड के नाम से भी जाने जाते हैं)

ऐसे फंड से एक साथ कई लक्ष्यों की पूर्ति होती है। ये फंड निवेशकों को संभावित वृद्धि का लाभ देने के साथ–साथ उनको वर्तमान आय का लाभ भी देते हैं। इस प्रकार के फंडों में आपकी उम्मीद के मुताबिक कई तरह के फायदे होते हैं। वृद्धि और आय फंड आपकी वर्तमान आय और उसमें बढ़ोतरी की सीमित संभावना के साथ कम–से–मध्यम स्थिरता होती है। आपको इस तरह के फंड लक्ष्य के साथ आराम की स्थिति के अनुसार जोखिम की कल्पना करनी चाहिए।

आय फंड (लाभांश की प्राप्ति)

इस तरह के फंडों का निश्चित आय की प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है। यह आपको नियमित आय की सुविधा देता है। अवकाश प्राप्त निवेशक इस तरह के फंड का फायदा उठा सकते हैं, क्योंकि इससे उन्हें नियमित रूप से लाभांश की प्राप्ति होगी। फंड मैनेजर ऋणपत्रों, कंपनी के सावधि जमा आदि की खरीददारी करता है, ताकि वह आपके लिए नियमित आय की व्यवस्था कर सके। यहां तक कि इसे एक स्थिर विकल्प माना जाता है और इसमें बाजार में होने वाली हलचल के बावजूद जोखिम काफी कम रहता है।

अनिर्धारित परिपक्वता अवधि फंड (क्लोज–एंड फंड)

इस तरह के फंड में निश्चित संख्या में शेयर रहते हैं और इसकी अवधि भी निश्चित होती है। (आमतौर पर तीन से पंद्रह वर्षों तक)। यह फंड एक तय समय तक ही खुलता है

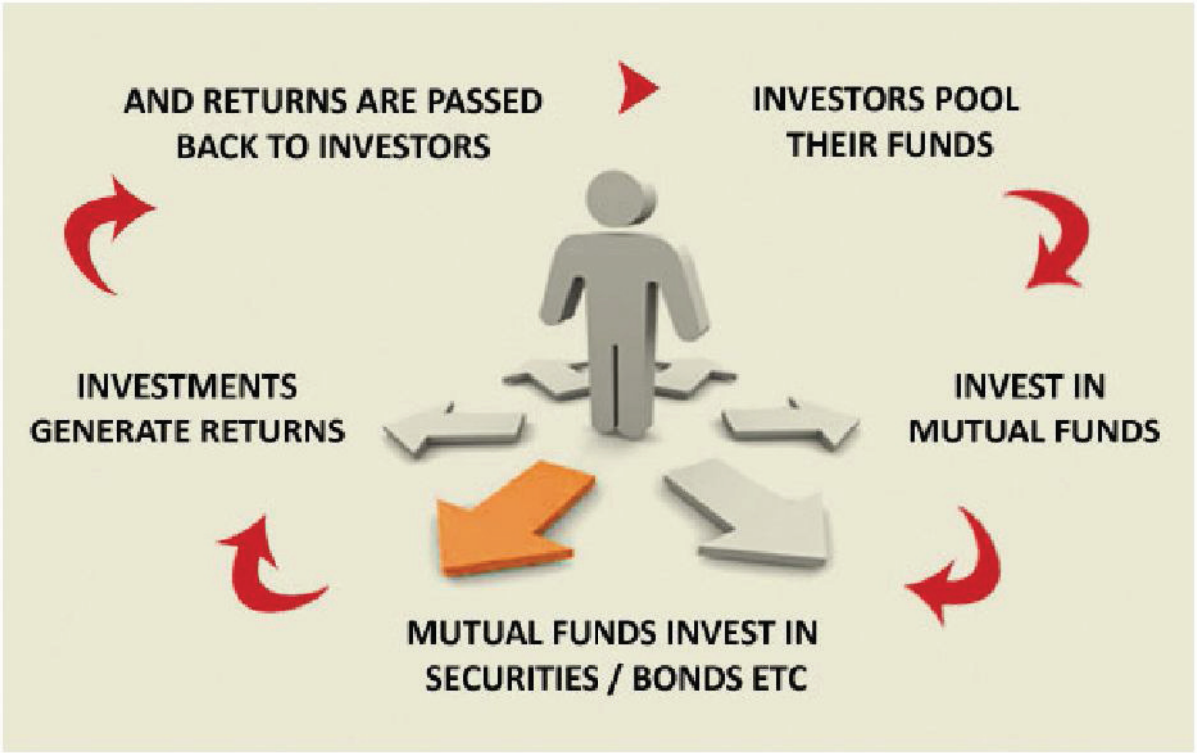

और इसमें खरीदार व विक्रेता के बीच संतुलन भी होता है। इसलिए अगर कोई अपनी प्रतिभूति बेचना चाहता है, तो आप उसे खरीद सकते हैं। क्लोज–एंड फंड स्टॉक एक्सचेंज में भी सूचीबद्ध हैं इसलिए इसे दूसरे स्टॉक की तरह खरीदा जा सकता है या दूसरे स्टॉक से बदला भी जा सकता है। आमतौर पर इसमें ऋणमुक्ति की भी व्यवस्था होती है, जिसका मतलब है कि इन्हें किसी निश्चित अवधि पर हटाया जा सकता है, जब निवेशक अपनी इकाईयों को मुक्त कराना चाहता हो।

इक्विटी म्यूचुअल फंडों में ज्यादा रिटर्न देने की क्षमता होती है, लेकिन इनमें जोखिम ज्यादा होता है इसलिए यह योजनाएं युवा निवेशकों के लिए अधिक उचित मानी जाती हैं, जो लंबी अवधि के लाभ के लिए छोटी अवधि के उतार–चढ़ाव को बर्दाश्त कर सकते हैं। बाजार के विशेषज्ञों के अनुसार 25 से 30 वर्ष की उम्र तक के किसी भी युवा के लिए इक्विटी फंड पसंद होना चाहिए, ताकि उसका स्थायी कोष बन जाए। इक्विटी फंड में निवेश का एक और लाभ यह है कि इसके लाभांश करमुक्त होते हैं।

निर्धारित परिपक्वता अवधि फंड (ओपन–एंडेड फंड)

इस तरह के फंडों का विकल्प पूरे साल उपलब्ध रहता है और ये किसी स्टॉक एक्सचेंज से सूचीबद्ध नहीं होते हैं म्यूचुअल फंड में अधिकतर ओपन–एंड फंड होते हैं। निवेशकों के पास अपने निवेश के किसी भी भाग की किसी भी समय खरीद और बिक्री का विकल्प होता है, जिसमें उसे फंड की निवल परिसंपत्ति मूल्य (नेट एसैट वेल्यू) से जुड़ा मूल्य मिल जाता है।

इक्विटी फंड के प्रकार

- **लार्ज कैप फंड**
  80 प्रतिशत से अधिक निवेश लार्ज कैप कंपनियों में इसलिए किया जाता है, ताकि अच्छा लाभ प्राप्त हो सके और स्टॉक के तेजी से गिरने की स्थिति में निवेश को सहारा मिल सके।
- **लार्ज और मिड–कैप फंड**
  इसके तहत 60 से 80 प्रतिशत निवेश को लार्ज–कैप कंपनियों में निवेश किया जाता है। स्टॉक में अगर कोई बड़ी गिरावट होती है, तो निवेश पर मामूली प्रभाव पड़ता है।
- **मिड और स्मॉल–कैप फंड**
  यहां कम से कम 60 प्रतिशत निवेश छोटी एवं मिड–कैप कंपनियों में किया जाता है। स्टॉक में अगर कोई तेज गिरावट होती है, तो इसका सीधा प्रभाव पड़ता है, लेकिन जब फंड में वृद्धि होती है, तो यह भी बहुत तेज़ी से बढ़ता है। ?
- **टैक्स (प्लानिंग) फंड**
  इन फंडों में आमतौर पर एक निश्चित लॉक इन अवधि(मानो तीन साल की यदि ओपन एंडेड फंड में न बदल दिए जाएं) इसके बाद इनकी खरीद–बिक्री की जा सकती है। आगे खरीदारी लॉक इन अवधि के दौरान किसी भी समय की जा सकती है। यह फंड आयकर कानून की धारा 80 (सी) के अंतर्गत छूट का लाभ देते हैं।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर फंड**
  इस प्रकार के फंडों का उपयोग केवल रिएलिटी सेक्टर में निवेश के लिए किया जाता है, जो परियोजना की संरचना की लम्बी के अवधि बाद ही रिटर्न देने शुरू करते हैं, रिटर्न फंड हाउस के ब्रांड और समय से परियोजना के पूरा होने पर साथ ही साथ निर्माण इकाईयों की जनता/कॉर्पोरेट को बिक्री पर निर्भर करते है।
- **अंतरराष्ट्रीय फंड**
  ये फंड 65 प्रतिशत से अधिक देश से बाहर के निवेश को आकर्षित करते है।
- **इक्विटी लिंक्ड बचत योजना (ईएलएसएस)**
  इसके तहत आप इक्विटी बाजार में निवेश किए गए अपने धन में बढ़ोतरी कर सकते हैं और आयकर की धारा 80सी के तहत आयकर छूट प्राप्त कर सकते हैं और कर मुक्त लाभांश मिलता है। कुछ ईएलएसएस फंडों में तीन साल की लॉक अप अवधि भी हो सकती है।

◆ फंड योजनाएं

इक्विटी फंड

जब इक्विटी फंडों में निवेश कर रहे हों, तो ऋण आधारित फंडों से अलग आपके पास मूलधन, ब्याज की दर या अवधि के बारे में किसी प्रकार का कोई आश्वासन नहीं होता। जब आप इक्विटी में निवेश करते हैं, तो आपको उस कंपनी का मालिक आपके निवेश के अनुरूप माना जाता है जिसमें आपने निवेश किया है। इसलिए सामान्यतः किसी अन्य मालिक की तरह आपका लाभांश आपकी कंपनी की उपलब्धि के साथ जुड़ जाता है। कंपनी का लाभ बढ़ने के कारण आपको इकाई का मूल्य एवं लाभ बेहतर मिलता है।

जैसे किसी उच्च जोखिम काम के साथ, इक्विटी फंड में ज्यादा बढ़ोतरी देने की क्षमता होती है। इस तरह के जोखिम को टालने के लिए म्यूचुअल फंड का विभिन्न कंपनियों में निवेश किया जाता है, जो आमतौर पर एक समान या आपस में संबंधित सेक्टरों में नहीं होती हैं। इसे विविधता कहा जाता है। लंबी अवधि में कोई भी व्यक्ति महंगाई और छोटी अवधि में बाजार के उतार चढ़ाव से बचना चाहता है। इक्विटी,हालांकि उतार–चढ़ाव वाली है, महंगाई के खिलाफ बेहतर विकल्प है, बशर्ते लंबी अवधि के लिए निवेश हो।

डेट फंड को और आगे बांटा जाता है, डेट–ओरिएंटेड एग्रेसिव फंड जिसमें औसत प्रतिशत 25 से 60 तक इक्विटी में होता है और डेट ओरिएंटेड कंजर्वेटिव फंड जिसमें 25 प्रतिशत से कम इक्विटी में होता है। इसलिए रिटर्न काफी साधारण हो सकता है और बेहतर रिटर्न मिलने के लिए निवेश की गई राशि की अवधि लंबी यानी तीन से पांच वर्ष हो सकती है।

◆ डेट यानी ऋण फंड (आय फंड के नाम से भी प्रचलित)

इस तरह के फंड ऐसे निवेश होते हैं, जिनमें प्रस्ताव पुस्तिका में लिखे निवेशक के उद्देश्य के अनुसार औसत मैच्योरिटी बदलती है। डेट या ऋण म्यूचुअल फंड उधार लेने के मॉडल पर काम करता है। उधार लेने की निम्नलिखित परिस्थितियां शामिल रहती हैं।

(ए) एक उचित आश्वासन कि मूल धन और निवेश किया गया धन वापस मिल जाएगा।

(बी) मिलने वाला ब्याज कमाए हुए ब्याज की दर पर निर्भर करेगा (जिसे कूपन की दर भी कहा जाता है) और

(सी) निवेश योजना की अवधि समाप्त होने या खत्म होने पर मूल धन वापस मिल जाएगा।

ऐसा माना जाता है कि कंपनियां, राज्य सरकारें और यहां तक कि केंद्र सरकार को अपनी योजनाओं को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। ऐसे में वे ऋण आधारित विभिन्न उपकरण जैसे ट्रेजरी बिल, ऋणपत्रों (डिबेंचर), सरकारी प्रतिभूतियां (जी–सेक्शन) आदि प्रस्तुत करती हैं और म्यूचुअल फंड उनके द्वारा जारी ऋण को खरीद लेते हैं।

डेट यानी ऋण फंड आपके निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने में मदद करता है क्योंकि इक्विटी फंड यह कम जोखिम वाला होता है, इसके बावजूद ये फंड लिक्विड फंड के मुकाबले ज्यादा जोखिम वाले होते हैं और उनका लक्ष्य नियमित रिटर्न उत्पादित कर आपके मूल धन की सुरक्षा करना होता है।

यह फंड आमतौर पर सरकारी प्रतिभूतियों, अपरिवर्तित ऋणपत्रों (एनसीडी), निवेश के प्रमाण पत्र (सीडी), व्यवसायिक पत्र (सीपी), बांड और अन्य नियत आय प्रतिभूतियों के साथ बड़ी संस्थाओं अथवा कॉरपोरेट संगठनों को नियत ब्याज दर पर धन देने में निवेश किए जाते हैं। इसलिए, डेट म्यूचुअल फंड में निवेश करना सबसे ठीक होगा यदि आप लिक्विड फंडों के मुकाबले मध्यम अवधि यानी तीन महीने से 2 साल के दौरान संभावित उच्च रिटर्न की अपेक्षा रखते हैं।

बचत खाता बनाम लिक्विड फंड

इसमें कोई संदेह नहीं कि आपात फंड के लिहाज से बचत खाते से बेहतर कोई विकल्प नहीं होता है। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, बचत खाते में उच्चतम लिक्विडिटी होती है क्योंकि आप अपनी राशि तक बैंक या एटीएम के माध्यम से कभी भी पहुंच सकते हैं। लेकिन अगर आपके पास आपात स्थिति में काम आने वाली राशि से अधिक फंड है, तो लिक्विड फंड अच्छे विकल्प हो सकते हैं। बैंक यह प्रयास करते हैं कि आपके पैसे मान्य ऋणमुक्ति आग्रह उनको मिलने के अगले कार्यकारी दिन ही मिल जाएं। वास्तव में लिक्विड फंड एक दिन से लेकर एक या दो महीने तक निवेश के लिहाज से उपयोगी माध्यम हो सकते हैं।

◆ लिक्विड फंड

वित्तीय भाषा में कहा जाए, तो दुनिया में लिक्विड का मतलब यह होता है कि आप अपनी निवेश की गई राशि को कितनी जल्दी प्राप्त कर सकते हैं। अत्यधिक लिक्विड परिसंपत्ति नकद राशि जैसी अच्छी होती है। लिक्विड फंड में जोखिम का कारक कम होता है और यह आपको बचत खाते के मुकाबले ज्यादा कुछ अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। इन फंडों को तेजी से मैच्योर होने वाले डेट प्रतिभूतियों में निवेश करना चाहिए, जिनमें जोखिम भी कम होता है। यहां विचार यह है कि डेट उपकरण की मैच्योरिटी जितनी नजदीक होगी, उतना ही मूल धन तथा ब्याज मिलने की उम्मीद भी बढ़ती जाएगी।

◆ हाइब्रिड फंड

जैसा कि नाम सुझाता है, हाइब्रिड फंड परिसंपत्ति वर्गों जैसे उनके पोर्टफोलिओ में डेट और इक्विटी का मिलाजुला रूप है, जिन्हें डेट, मनी मार्केट उपकरणों और इक्विटी में मिश्रित रूप से निवेशित किया जाता है।

◆ डाइवर्सिफाइड फंड (संतुलित फंड के नाम से भी प्रचलित)

अगर कोई निवेशक इक्विटी बाजार निवेश में जोखिम से बचना चाहता है, तो उसे संतुलित फंड का चुनाव करना चाहिए। जहां इक्विटी में निवेष कम होता है।

म्यूचुअल फंड में निवेश की योजना, लाभ एवं नुकसान का विश्लेषण

लाभ	नुकसान
• ज्यादातर फंड लचीले, लिक्विड, स्पष्ट और सुरक्षित होते हैं। • फंड आपको विविधता में मदद करते हैं। • फंड जमा करने या निकास के खर्च को कम करते है। • लाभांश पर आपको आयकर छूट का फायदा मिलता है। • पेशेवर प्रबंधन भी मौजूद रहता है। • सुस्पष्ट निवेश के लक्ष्य। • सामान्य पुनःनिवेश कार्यक्रम।	• कई फंडों में भारी फीस रहती है, जिससे समस्त रिटर्न कम हो जाते हैं। • एक समय के बाद आंकड़े बताते हैं कि ज्यादातर सक्रिय प्रबंधित फंड औसत रूप से अपने तय मानक से कमतर प्रदर्शन करते हैं। • म्यूचुअल फंड को स्टॉक एक्सचेंज में नियमित ट्रेडिंग घंटों के दौरान न तो खरीदा जा सकता है औन न ही बेचा जा सकता है, लेकिन इसके बदले एक दिन में एक ही बार इनका मूल्य तय होता है। • कई बार फंड मैनेजर का रिकॉर्ड किसी खास फंड की सफलता या असफलता को सुनिश्चित करता है। मैनेजर में बार–बार परिवर्तन से पहले दोषपूर्ण मिश्रण के निवेशों के फैसलों को रद्द करने की स्थिति हो सकती है। • निवेशों का दोषपूर्ण मिश्रण फंड को नीचे की ओर ले जाने का प्रमुख कारण होता है।

तुलनात्मक अध्ययन

कंस्यूमर वॉयस भारांक (मानदंड) अंक 100		15	15	10	
फंड का नाम	टीडी के साल	फंड श्रेणीकरण	नेट एसेट्स	एनएवी	
इक्विटी फंड्स			रूपए करोड़ में	रूपए	
यूटीआई इक्विटी	1992	5*(15)	3,378.59 (13)	97 (5)	
आईसीआईसीआई फोकस्ड ब्लूचिप	1998	5*(15)	7,108.7 (15)	28 (3)	
एचडीएफसी टॉप 200	1996	4*(10)	12,800.23 (15)	349 (10)	
यूटीआई अपॉर्चुनिटी	2005	5*(15)	4,701.76 (15)	47 (3)	
फ्रैंकलीन इंडिया प्राइमा प्लस	1994	4*(10)	2,761.97 (10)	405 (10)	
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल डायनेमिक–रेगुलर प्लान	2002	5*(15)	4,995.89 (15)	185 (7)	
फ्रैंकलीन इंडिया हाई ग्रोथ क्वॉयज	2007	5*(15)	810.23 (3)	27 (3)	
एल एंड टी इंडिया स्पेशल सिचुएशंस	2006	4*(10)	74.44 (3)	33 (3)	
फ्रैंकलीन इंडिया स्मॉलर क्वॉयज	2006	5*(15)	1,072.47 (5)	34 (3)	
यूटीआई मिड कैप	2004	4*(10)	1,361.2 (5)	72 (5)	
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल वैल्यू डिस्कवरी– रेगुलर	2004	5*(15)	6,062.78 (15)	105 (7)	
एचडीएफसी मिड कैप अपॉर्च्युनिटीज	2002	4*(10)	6,642.99 (15)	34 (3)	
रिलायंस टैक्स सेवर	2005	5*(15)	2,978.56 (10)	44 (3)	
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल टैक्स प्लान रेगुलर	1999	5*(15)	2,168.03 (10)	263 (10)	
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल बैलेंस्ड– रेगुलर	1999	5*(15)	996.94 (3)	87 (5)	
एचडीएफसी बैलेंस्ड	2000	4*(10)	2,018.36 (10)	102 (7)	
डेट फंड्स					
बिड़ला सनलाइफ डायनेमिक बांड– रिटेल	2004	4*(10)	8,666.55 (15)	23 (3)	
फ्रैंकलीन इंडिया इंकम बिल्डर	1997	4*(10)	1,415.55 (5)	46 (3)	
टाटा डायनेमिक बाड–ए	2003	4*(10)	320.03 (3)	20 (3)	
बिड़ला सनलाइफ मीडियम टर्म	2009	4*(10)	3,307.08 (13)	16 (3)	
रिलायंस रेगुलर एसएबी–डेट	2005	4*(10)	4,807.07 (15)	18 (3)	

नोट्सः

ए) किसी फंड का एनएवी 16–17 नवंबर 2014 तक है।

बी) फंड की स्थापना उसके शुरू होने के वर्ष में दिखाई जाए।

	15	20	10	10	5	कुल योग 100
	जोखिम का श्रेणीकरण	रिटर्न पांच साल	रिटर्न श्रेणीकरण	खर्च का अनुपात	निकास का भार	
		(%)		(%)	(%)	
	निम्न (15)	16.95 (15)	उच्च (10)	2.13 (5)	1 (2)	80
	निम्न (15)	17.56 (15)	उच्च (10)	2.23 (5)	1 (2)	80
	उच्च (5)	15.19 (10)	एबी औसत (5)	2.24 (5)	1 (2)	62
	निम्न (15)	16.72 (15)	उच्च (10)	2.19 (5)	1 (2)	80
	बीईएल औसत (5)	17.63 (15)	एबी औसत (5)	2.31 (5)	1 (2)	62
	बीईएल औसत (5)	17.31 (15)	एबी औसत (5)	2.23 (5)	1 (2)	69
	औसत (10)	19.75 (15)	उच्च (10)	2.64 (3)	1 (2)	61
	बीईएल औसत (5)	17.38 (15)	उच्च (10)	2.68 (3)	1 (2)	51
	बीईएल औसत (5)	24.43 (20)	उच्च (10)	2.72 (3)	1 (2)	63
	औसत (10)	24.20 (20)	उच्च (10)	2.75 (3)	1 (2)	65
	निम्न (15)	23.61 (20)	एबी औसत (5)	2.28 (5)	1 (2)	84
	निम्न (15)	24.63 (20)	एबी औसत (5)	2.42 (5)	1 (2)	75
	उच्च (5)	22.65 (20)	उच्च (10)	2.33 (5)	0 (5)	73
	बीईएल औसत (5)	19.44 (15)	उच्च (10)	2.46 (5)	0 (5)	75
	बीईएल औसत (5)	18.51 (15)	एबी औसत (5)	2.64 (3)	1 (2)	53
	बीईएल औसत (5)	19.58 (15)	एबी औसत (5)	2.30 (5)	1 (2)	59
	औसत (10)	8.84 (5)	एबी औसत (5)	1.18 (10)	1 (2)	60
	औसत (10)	9.19 (5)	एबी औसत (5)	1.91 (5)	0.5 (3)	48
	औसत (10)	8.26 (5)	एबी औसत (5)	1.70 (5)	0.5 (3)	46
	बीईएल औसत (5)	9.50 (5)	एबी औसत (5)	1.46 (10)	2 (0)	51
	निम्न (15)	8.31 (5)	एबी औसत (5)	1.85 (5)	1 (2)	62

सी) फंड ग्रेडिंग चार या पांच सितारा ईटी वेल्थ/मूल्य शोध साइट पर आधारित होती है।

डी) निवेश के पहले कृपया यह जांच लें कि जानकारी पुस्तिका में किसी लॉक–इन–पीरियड की सूचना है या नहीं।

निवेश के लिहाज से कंस्यूमर वॉयस की सिफारिश

इक्विटी फंड्स

सबसे अच्छा फंड

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल वैल्यू डिस्कवरी

अच्छे फंड

यूटीआई इक्विटी

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल फोकस्ड ब्लू चिप

यूटीआई अपॉर्च्युनिटीज

डेट फंड्स

सबसे अच्छा फंड

रिलायंस रेग्यूलर सेविंग्स डेट

अच्छा फंड

बिड़ला सनलाइफ डायनेमिक बांड रिटेल

हमने निम्नलिखित पैरामीटर पर आधारित फंडों का मूल्यांकन और चुनाव किया है।

1. पांच साल पर मिलने वाला रिटर्न।
2. एक समय के अंतराल पर परिसंपत्ति के प्रबंधन का बार–बार दोहराव।
3. फंड का श्रेणीकरण (इकोनोमिक्स टाइम्स के वेल्थ–वैल्यू रिसर्च रेटिंग पर आधारित) जो समय–समय पर परिवर्तित होता है।
4. नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) जो प्रतिदिन बाजार में होने वाले उतार–चढ़ाव के आधार पर बदलता है।
5. खर्च का अनुपात (कम और बेहतर का मतलब है कि फंड को भली–भांति प्रबंधन किया गया है और यह निवेशक के लिए अनुकूल है)।
6. जोखिम का निर्धारण (निवेश करने के समय)।
7. रिटर्न की रेटिंग (फंड रिटर्न्स)।
8. निकास का भार (विवरणिका के अनुसार प्रस्तावित होल्डिग अवधि के बाद फंड के निकास के समय) जो होल्डिग अवधि के आधार पर एक फंड से दूसरे फंड में बदलता है।

प्रभावित करने वाली पहचान के लिए बिंदु

कंस्यूमर वॉयस की टीम ने सारे उत्पादों का अध्ययन किया और हर चिन्हित परिवर्तनों को उनकी पहचान और प्रभावकारी तत्वों के आधार पर अंक प्रदान किए, जिन पर एक निवेशक खरीदने से पहले विचार करता है। कंस्यूमर वॉयस निश्चित व चुने हुए फंड (सारणी देखें) की ओर जाने के रास्ते बताए हैं और म्यूचुअल फंड के पोर्टफोलियो में सारे फंडों के बारे में नही बताया गया है।

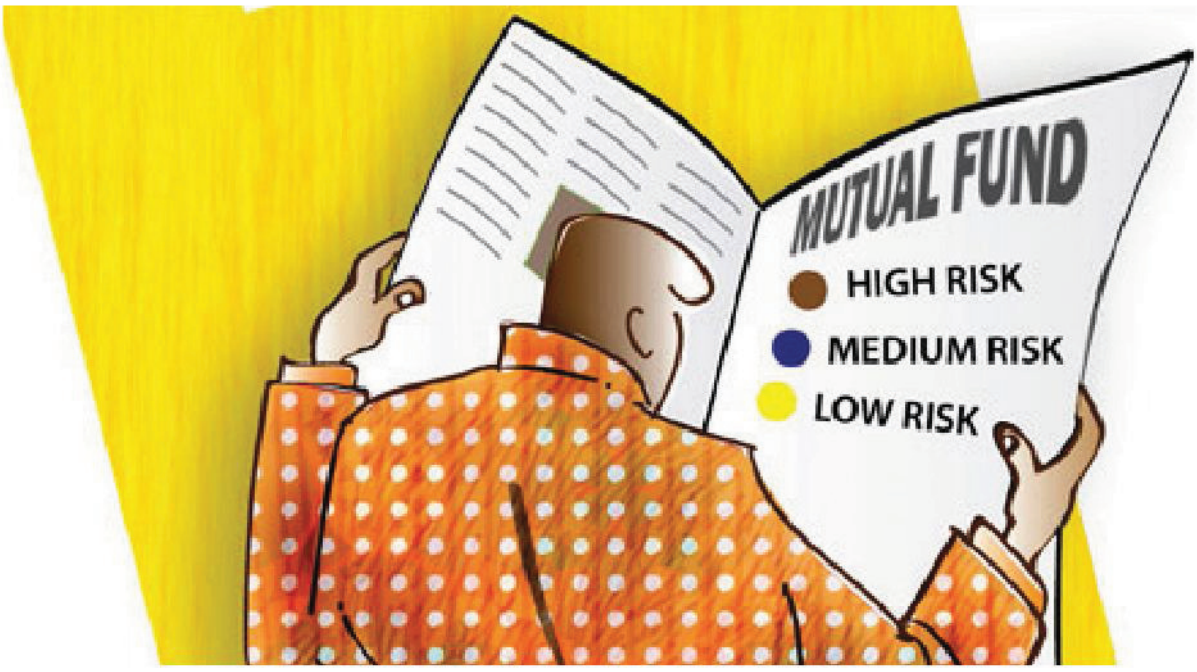

◆ गिल्ट फंड

ये ऐसे म्यूचुअल फंड होते हैं, जो केवल सरकारी प्रतिभूतियों में निवेशित किए जाते हैं। यह जोखिम से बचने की चाहत वाले और संकोची निवेशकों द्वारा पसंद किए जाते हैं, जो सुरक्षित सरकारी बांड की छाया में निवेश करना चाहते हैं। चूंकि गिल्ट फंड केवल सरकारी बांड में ही निवेश होते हैं, तो ऐसे में निवेशक ऋण जोखिम से बचे रहते हैं।

◆ मनी मार्केट फंड

सबसे सावधान रहने वाले निवेशक मनी मार्केट फंड का चुनाव करते हैं, जिसमें मूल धन संरक्षण का प्रबंधन प्रमुख लक्ष्य होता है। यह बताता है कि इसमें लाभ एक विकल्प नहीं हालांकि दी जाने वाली ब्याज की दर बैंक में जमा राशि पर मिलने वाली ब्याज दर से कहीं ज्यादा हो सकती है। इस तरह के फंडों में जोखिम काफी कम होता है, लेकिन ये आपकी शुरूआती खरीद क्षमता वाले निवेश की सुरक्षा नहीं करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में महंगाई ने खरीद क्षमता समाप्त कर देगी जब आपका धन भी महंगाई दर से सुरक्षित नहीं रहा है। यह फंड, हालांकि, अत्यधिक लिक्विड है इसलिए आप हमेशा अपनी निवेश की रणनीति को बदलने की स्थिति में रहते हैं।

◆ सेक्टर स्पेसिफिक/थेमैटिक फंड (क्षेत्र विशिष्ट /विषयगत फंड)

इस तरह के फंड क्षेत्र विषिष्ट (जैसे सिमेंट, लोहा और स्टील आदि) में निवेशित किए जाते हैं। क्षेत्र विशिष्ट फंड का लक्ष्य अपने पूरी राशि को एक से तीन क्षेत्रों में निवेशित करना होता है। यह क्षेत्र एक दूसरे के साथ करीब से जुड़े होते हैं।

वहीं दूसरी ओर विषयगत फंड किसी एक सेक्टर से बंधकर नहीं रहता। यह उन सारे क्षेत्रों में मौजूद रहता है, जो एक ही आम विषय पर केंद्रित होते हैं। इन फंडों के कुछ विषयों के चारों ओर आधारभूत संरचना और ग्रामीण भारत हैं।

◆ इंडेक्स फंड

इस तरह के फंड इक्विटी फंड होते हैं, जो किसी खास इक्विटी इंडेक्स को दोहराते हैं उन स्टॉक में निवेश करके जो इंडेक्स को ट्रैक करते हैं। अगर आप इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, लेकिन फंड मैनेजर की क्षमताओं को लेकर भरोसा नहीं है, तो इंडेक्स फंड आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

गोपाल रवि कुमार और सुभाष तिवारी की रिपोर्ट

म्यूचुअल फंड के बारे में मिथक (असत्य)

◆ मिथक 1: फंड केवल लंबी अवधि के लिए होते हैं

हां, लंबी अवधि में थोड़ा लाभ होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता है कि म्यूचुअल फंड केवल ऐसे निवेशकों के लिए ही होते हैं। वास्तव में कई लघु अवधि की योजनाएं भी होती हैं, जहां आप एक दिन या कुछ सप्ताह के लिए निवेश कर सकते हैं।

◆ मिथक 2: म्यूचुअल फंड केवल इक्विटी उत्पाद होते हैं

आम तौर पर लोग इक्विटी फंड के साथ म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। म्यूचुअल फंड में निवेश करने से आप इक्विटी से लेकर डेट तक सभी में निवेश कर सकते हैं। डेट के अंदर वे डेट उपकरणों में निवेश कर सकते हैं, जो एक दिन में भी मैच्योर हो सकता है (मनी मार्केट उपकरण के नाम से भी प्रचलित) और 1 से दस वर्षों में भी।

◆ मिथक 3: निम्न निबल परिसंपत्ति मूल्य (एनएवी) के फंड के मुकाबले उच्च निबल परिसंपत्ति मूल्य(एनएवी) वाले फंड ज्यादा अच्छे होते हैं

तथ्य यह है कि निवेश की राशि पर रिटर्न का प्रतिशत क्या है, इस पर गौर किया जाता है। इसलिए किसी कम एनएवी वाले और इकाइयों की ज्यादा संख्या पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय यह कारक विचार करने लायक है जैसेकि प्रदर्शन रिकॉर्ड, फंड प्रबंधन और उतार–चढ़ाव जो पोर्टफोलियो रिटर्न को सुनिष्चित करते हैं।

◆ मिथक 4: निवेश के लिए बड़ी राशि आवश्यक होती है

यह सबसे लंबे समय से स्थापित मिथक है, जिसका कोई मतलब नहीं है। ज्यादातर फंड में 1000 रूपए की राशि के साथ निवेश किया जा सकता है, जिसमें अधिकतम राशि की कोई सीमा नहीं होती। वास्तव में इक्विटी से जुड़ी बचत योजनाएं हैं जिसमें राशि 500 रूपए जितनी कम होती है। साथ ही यहां काई मासिक या वार्षिक रख रखाव शुल्क नहीं लिया जाता है, भले ही आप आगे निवेश करें या न करें। म्यूचुअल फंड की विभिन्न योजनाओं में सिस्टेमैटिक प्लान की सुविधा भी होती है, जो आपको छोटी राशि से लेकर आपकी इच्छा तक लगातार निवेश की सुविधा देते हैं।

◆ मिथक 5: डीमैट अकाउंट आवश्यक होता है

यह सही नहीं है। ऐसे कई रास्ते हैं, जिनके माध्यम से आप म्यूचुअल फंड खरीद सकते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं

(1) ऑफलाइन (किसी वित्तीय बिचौलिये जैसे स्वतंत्र वित्त सलाहकार, बैंक, वित्त वितरण संगठन आदि की मदद से आवेदन भरना)

(2) ऑनलाइन – कई उपलब्ध वितरक वेबसाइट्स के माध्यम से या परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों (म्यूचुअल फंड कंपनियों) के माध्यम से उनकी वेबसाइट पर।

अगर आपके पास डीमैट अकाउंट है, तो आप म्यूचुअल फंड को दूसरे डीमैट अकाउंट के साथ समेकित कर सके हैं। यहां तक कि आप उसी मध्यस्थ के माध्यम से म्यूचुअल फंड की खरीद कर सकते हैं, जो माध्यम स्टॉक एक्सचेंज से शेयरों की खरीद और बिक्री में आपकी मदद करता है।

◆ मिथक 6: उच्च निबल परिसंपत्ति मूल्य वाले फंड ज्यादा उंचाई तक जाते है

यह बहुत सामान्य भ्रांति है क्योंकि म्यूचुअल फंड का कंपनियों के शेयरों के साथ सामान्य तौर पर संबंध रहता है। याद रखें म्यूचुअल फंड में निवेश शेयर में निवेश है, इसलिए वह उसमें प्रवेश कर सकते हैं और बाहर निकल सकते है जब भी फंड मैनेजर उचित समझे। यदि फंड मैनेजर को महसूस होता है कि स्टॉक शिखर पर है, तो वह उसे बेचने के लिए चुनता है।

इस मिथक की सच्चाई को अच्छी तरह से समझने के लिए आपको एनएवी को समझने की आवश्यकता है, जो कुछ नहीं है, बल्कि किसी भी दिन फंड द्वारा खरीदे गए शेयरों के बाजार मूल्य की प्रतिकिया मात्र है। अधिकतर संभावना है कि कई वर्षों तक अच्छे प्रदर्शन के कारण एनएवी शिखर पर हो सकती है।